ज्ञान का निर्माण :- काँट के अनुसार हमारी ज्ञान शक्ति के दो भाग है, एक संवेदन-शक्ति है तथा दूसरी बुद्धि है। संवेदन शक्ति ज्ञान के लिए संवेदना प्रस्तुत करती है। यह संवेदन उसे बाहर से मिलता है। संवेदन शक्ति अंशतः निष्क्रिय तथा अंशतः सक्रिय रहती है। निष्क्रिय इसलिए कि वह संवेदनों को अपने अन्दर से उत्पन्न नहीं करती तथा सक्रियता इसलिए कि वह संवेदनों को उस रूप में ग्रहण नहीं करती जिस रूप में वह है। इसके अन्दर दो अनुभव-निरपेक्ष (Apriori) आकार है जिसे देश तथा काल कहा जाता है। सभी संवेदनों को वह देश और काल के जरिए ही ग्रहण करती है। जैसे- आँखो पर हरा चश्मा डाल लेने से सभी चीजें हरी दिखती है। उसी प्रकार संवेदन-शक्ति के दो चश्मे है-देश और काल। संवेदन शक्ति के इन्ही दो चश्मों से हम संवेदन को किसी न किसी देश तथा किसी न किसी काल के अन्तर्गत प्राप्त करते है। इन दोनों चश्मो को अलग करके संवेदन को नहीं देखा जा सकता है। देश और काल संवेदन-शक्ति से बाहर नहीं है। इसका कोई विषयगत अस्तित्व नहीं है। अतः कोई भी पदार्थ यथार्थतः देश और काल में नहीं है। जैसे:- मान ले कि आपके सामने एक हाथी है तो आपको हाथी का ज्ञान कैसे होता है। तो आप कहते है आँखो से। अब दूसरा प्रश्न यह है कि वह हाथी आपके आँख में है या उसके बाहर। तब आप कहेंगे कि हाथी आँख में नहीं है बल्कि आँख के बाहर है। इसी प्रकार संवेदन-शक्ति के दो

क्षेत्र है जिसके जरिए संवेदन होता है।

वस्तुओं का जो संवेदन देश एवं काल में होता है। वस्तुत: उन वस्तुओं का विषयगत अस्तित्व होता है। यदि वस्तुओं के विषयगत अस्तित्व को नहीं माना जाए और कहा जाए कि वस्तुओं का संवेदन तो देश-काल के जरिये होता है। अत: वस्तुएँ देश और काल में ही हैं, तो यह बात भी मानना पड़ेगा कि चूँकि मिर्च का ज्ञान हमें आँखों से होता है, अत: मिर्च हमारे आँखों में है। इन कठिनाइयों से उबरने के लिए वस्तुओं का स्वतंत्र अस्तित्व मानना ही पड़ेगा। यह बात दूसरी है कि हम उन्हें उस रूप में नहीं देखते जिस रूप में वे हैं, बल्कि देश काल में ही देखते हैं। अत: वस्तुओं का स्वरूप हमारे लिए अज्ञात तथा अज्ञेय है।

जब तक संवेदन-शक्ति को ज्ञान के विषय का संवेदन ~~हो तो फिर बुद्धि~~ जाता है, तब ज्ञान प्राप्ति के लिए बुद्धि असंबद्ध संवेदन को संबद्ध करने का कार्य करती है। और तब संबद्ध संवेदनों से वाक्य का निर्माण होता है। फिर उन वाक्यों को सम्बद्ध करके ज्ञान का रूप देती है। उदाहरणार्थ :- 'मनोज मूर्ख है।' इस वाक्य में बुद्धि ने दो संवेदनों 'मनोज' तथा 'मूर्ख' के बीच सम्बन्ध स्थापित किया है। संवेदनों को संबद्ध करने के लिए बुद्धि के पास बारह जन्मजात धारणाएँ हैं :— (i) एकता (ii) अनेकता (iii) सम्पूर्णता (iv) कार्य-कारण भाव (v) भाव (vi) अभाव (vii) सीमित भाव (viii) द्रव्य-गुण भाव (ix) परस्पराश्रय भाव (x) सम्भावना-असम्भावना (xi) अस्तित्व-अनस्तित्व (xii) संदिग्धता-असंदिग्धता इन्हीं बारह प्रकार के साँचों में ढालकर विभिन्न प्रकार के संवेदनों को संबद्ध किया जाता है। जैसे — 'मनुष्य मरणशील है।' इस वाक्य में 'मनुष्य' तथा 'मरणशील' संवेदन द्वारा मिले हैं।

इन संवेदनों को बुद्धि ने कार्य-कारण भाव नामक अपनी अनुभव निरपेक्ष धारणा द्वारा स्थापित कर वाक्य का निर्माण किया है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि

सिर्फ संवेदन शक्ति या सिर्फ बौद्धिक धारणा से कोई वाक्य नहीं बनती। अतः कांट ने भी कहा है कि - "बिना बुद्धि के संवेदन-शक्ति अंधी है एवं संवेदन-शक्ति के बिना बुद्धि रिक्त है। स्पष्ट है कि दोनों के सहयोग से ही वाक्य बनते हैं। परन्तु वाक्य के निर्माण-मात्र से ही ज्ञान की ईमारत नहीं बन जाती। इसके लिए वाक्यों को संबद्ध करना पड़ता है। जो कार्य बुद्धि करती है। इस प्रक्रिया से प्राप्त ज्ञान में नवीनता एवं सार्वभौमिकता दोनों होती है। नवीनता इसलिए कि उनका विषय संवेदन है, जो अनुभव से प्राप्त होने के कारण नवीन है, और सार्वभौमिकता इसलिए कि उसके निर्माण में बुद्धि के जो बारह अनुभव निरपेक्ष धारणाएँ हैं वह काम करती है। जो सभी मनुष्यों में विद्यमान रहते हैं।

इस प्रकार कांट ने अपने समीक्षावाद के द्वारा ज्ञान की यथार्थता तथा सार्वभौमिकता इन दोनों की व्याख्या की है। इस तरह से कांट ने दिखला दिया कि अनुभव-निरपेक्ष संश्लेषणात्मक निर्णयों की संभावना है।

अनुभववाद, बुद्धिवाद एवं समीक्षावाद में भेद:-

अनुभववादियों के अनुसार हमलोगों का मन चींटी के समान है, जो बाहर से सामग्रियों को संचित करती है परंतु स्वंय किसी सामग्री का निर्माण नहीं करती। बुद्धिवादियों के अनुसार हमारा मन मकड़ी के समान है जो बाहर से सामग्री संचित नहीं करती बल्कि अपने भीतर की सामग्रियों का ही उपयोग कर जाल बुनती है। जबकि समीक्षावादी इन दोनों से भिन्न है। इसके अनुसार हमारा मन मधुमक्खी की तरह है जो बाहर से कुछ सामग्रियों का संग्रह आवश्यकतानुसार करती है, और उन्हें बिल्कुल रूपान्तरित करके मधु बना डालती है।

निष्कर्ष - (i) बुद्धिवादी सिर्फ बुद्धि को ज्ञान प्राप्त करने का साधन मानते हैं जबकि अनुभववादी सिर्फ अनुभव को ज्ञान प्राप्ति का साधन मानते हैं। फलतः बुद्धिवादियों के लिए अनुभव का कोई महत्व नहीं है और अनुभववादियों के लिए बुद्धि का कोई महत्व नहीं है। परंतु कांट दोनों

Scanned with CamScanner

में समन्वय स्थापित कर इस दोष से बच जाते हैं। उनके अनुसार ज्ञान प्राप्ति में बुद्धि एवं अनुभव दोनों का हाथ है।
(ii) बुद्धिवाद के लिए ज्ञान की नवीनता का कोई महत्व नहीं एवं अनुभववाद के लिए ज्ञान की सामान्यतया तथा अनिवार्यता का कोई महत्व नहीं। परंतु कांट ने अपने समीक्षावाद में ज्ञान के लिए सामान्यतया, अनिवार्यता तथा नवीनता तीनों को आवश्यक बतलाया है।
(iii) बुद्धिवाद के मुताबिक बुद्धि पूर्ण सक्रिय है एवं अनुभववाद के मुताबिक वह बिल्कुल निष्क्रिय है। कांट ने यह समन्वय स्थापित करते हुए कहा है कि बुद्धि अंशतः सक्रिय है एवं अंशतः निष्क्रिय है।

कांट के समीक्षावाद के दोष :— (i) कांट के समीक्षावाद का अंत अज्ञेयवाद में होता है। अज्ञेयवाद में आंतर्विरोध पाया जाता है। अज्ञेय उसे कहते हैं जिसके विषय में कुछ भी जानकारी न हो। परन्तु यथार्थ वस्तु के विषय में इतना तो हम अवश्य जानते हैं कि वह 'अज्ञात एवं अज्ञेय' है। इस हालत में इसे अज्ञेय नहीं कहा जा सकता। कांट का अज्ञेय यहाँ ज्ञेय बन जाता है।
(ii) कांट ने अनुभव निरपेक्ष बारह धारणाओं की कल्पना की और उन्हें ऐसा लगा कि इस कल्पना के आधार पर वे सारे दार्शनिक प्रश्नों का हल निकाल लेंगे। परन्तु जिन धारणाओं को उन्होंने इतना महत्व दिया, उनके अस्तित्व का कोई युक्तिपूर्ण प्रमाण नहीं दिया। यह उनकी सबसे बड़ी कमजोरी है।

Rishikesh
25-05-2020

Scanned with CamScanner